विनोबा कथावली

■ वर्ष : द्वितीय ■ अंक : 6 ■ जनवरी 2026

पाठ्यक्रम से एक कदम आगे

रायगढ़ (छत्तीसगढ़): हर शिक्षक मन ही मन यह चाहता है कि वह बच्चों को किताबी शिक्षा के साथ व्यवहारिक योग्यताएँ भी दे जो जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के लिए आवश्यक हैं। रायगढ़ ज़िले के लैलूंगा विकासखंड के भेड़ीमुड़ा–अ प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत सुश्री सोनिया भगत इसी सोच को अपने काम में उतारती हैं।

सोनिया जी राष्ट्रीय स्तर की शतरंज खिलाड़ी हैं। पढ़ाने की ज़िम्मेदारियों के चलते अब वे ओपन टूर्नामेंट्स में नहीं खेल पातीं। लेकिन पिछले 5 वर्षों से वे अखिल भारतीय सिविल सर्विसेस के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं में छत्तीसगढ़ की महिला टीम की ओर से भाग ले रही हैं और उन्होंने 3 पदक भी जीते हैं। जब बच्चे अपनी शिक्षिका को प्रतियोगिताओं में खेलते हुए देखते हैं, तो उनकी आँखों में गर्व झलकता है।

टीम विनोबा से बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि शतरंज सिर्फ खेल नहीं है। यह धैर्य, ध्यान और चलने से पहले ठहरना सिखाता है। हर चाल से पहले उसके महत्त्व और परिणाम का आंकलन आवश्यक होता है। यही आदत बच्चों को पढ़ाई में भी बहुत काम आती है।

प्रधानाध्यापक श्री जयलाल पटेल के साथ मिलकर सोनिया जी प्राथमिक स्कूल की पाँच कक्षाओं की पढ़ाई सँभालती हैं। वे आधिकारिक रूप से स्पोर्ट्स टीचर नहीं है पर फिर भी बच्चों को शतरंज सिखाती हैं। सोनिया जी बच्चों को और उनके अभिभावकों को प्रोत्साहित करती रहती हैं और बताती हैं कि यह कम खर्च और छोटी जगह में खेला जा सकता है। बच्चे प्रतियोगिताओं में भाग लेना चाहें तो आवश्यकता होने पर उनकी फीस भी भरती हैं।

माध्यमिक और उच्च माध्यमिक कक्षाओं के कई छात्र शतरंज की प्रतियोगिताओं में नियमित रूप से खेल रहे हैं। ये वही छात्र हैं जो प्राथमिक कक्षाओं में सोनिया जी के मार्गदर्शन में शतरंज सीखते थे।

आज सोनिया जी अपने प्रिय खेल का अभ्यास करने के लिए अलग समय नहीं दे पाती। तो छात्रों को सिखाने की प्रक्रिया में उन्होंने अपना अभ्यास व्यापक बना लिया है। अब उनका हर छात्र विजय की दिशा में एक एक कदम चल रहा है - पढ़ाई में और खेल में भी। ■

जब मज़दूर से लेकर अधिकारी तक के बच्चे एक ही स्कूल में पढ़ेंगे, तो सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता समाज के हर तबके की निजी चिंता बन जाएगी। इससे शिक्षकों का मनोबल, जवाबदेही और कार्य-निष्ठा—तीनों स्वाभाविक रूप से सुदृढ़ होंगे।

– जलगाँव DIET प्राचार्य डॉ. झोपे

पेज 2

कहानी 89% प्रतिशत योग्यता की

14 साल की सोमारी का सारा समय मज़दूरी कर के कमाने में और घर के कामों में ही लग जाता था। शिक्षिका श्रीमती सईदा ख़ान ने उसे समझाया कि पढ़ाई से ही हालात सुधर पाएँगे। सोमारी सप्ताह में 3 दिन स्कूल आने लगी और बाकी 3 दिन सईदा जी सोमारी के घर जाती थीं। दोनों की मेहनत रंग लाई।

विनोबा विशेष

पेज 4-5

'शिक्षक स्वभाव से ही रचनात्मक और स्वतंत्र सोच वाले होते हैं'

जलगाँव (महाराष्ट्र): हमारी स्कूल शिक्षा व्यवस्था में एक बुनियादी सिद्धांत को दृढ़ता से अपनाने की ज़रूरत है—कम से कम पहली से दसवीं कक्षा तक यह फर्क ही नहीं होना चाहिए कि बच्चा सरकारी स्कूल में पढ़ता है, अनुदानित में या निजी विद्यालय में। इस उम्र में हर बच्चे को एक ही सार्वजनिक विद्यालय में समान गुणवत्ता की शिक्षा मिलनी चाहिए। यही सच्चा सामाजिक न्याय है।

टीम विनोबा से हुई हालिया बातचीत में यही विचार डॉ. अनिल झोपे ने पूरी स्पष्टता और संवेदनशीलता के साथ रखा। जलगाँव ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) के प्राचार्य डॉ. झोपे का मानना है कि शिक्षक स्वभाव से ही रचनात्मक और स्वतंत्र सोच वाले होते हैं। इसलिए उन्हें अपनी समझ, शैली और समय के अनुरूप शिक्षण पद्धतियाँ अपनाने की पूरी आज़ादी मिलनी चाहिए।

जलगाँव का समग्र शिक्षा परिदृश्य कैसा है?

परिदृश्य फिलहाल संतुलित लेकिन चुनौतीपूर्ण है। अपेक्षाकृत जागरूक और आर्थिक रूप से सक्षम अभिभावक अपने बच्चों को निजी या अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों में भेज रहे हैं, जिससे सरकारी स्कूलों में वंचित और कम-संपन्न पृष्ठभूमि के बच्चों का अनुपात बढ़ गया है। ज़िला परिषद स्कूलों में बड़ी संख्या में आदिवासी, दिहाड़ी और प्रवासी मज़दूर परिवारों के बच्चे पढ़ते हैं। अनियमित हाज़िरी, भाषा, संस्कृति और घरेलू परिवेश के कारण शिक्षकों को भी पाठ्यक्रम की गति और कक्षा-स्तरीय योजना तय करने में समस्या होती है।

इन चुनौतियों से निपटने में शिक्षकों को किस तरह सहयोग दिया जाता है?

हमारा कार्य मुख्यतः शैक्षिक सहयोग का है - राज्य और केंद्र सरकार द्वारा तय किए गए शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से ज़मीन पर लागू करना।

प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों को एक समान शैक्षिक आधार देना है—नए शिक्षकों को उपलब्ध पाठ्यक्रम और सामग्री से परिचित कराना, अनुभवी शिक्षकों के लिए रिफ्रेशर ट्रेनिंग देना, और यह सुनिश्चित करना कि सभी बुनियादी शिक्षण पद्धतियों व शैक्षिक संसाधनों का प्रभावी उपयोग कर सकें। इसके बाद शिक्षक अपनी समझ और शैली के अनुसार कक्षा में इसे लागू करते हैं।

डॉ. अनिल झोपे
जलगाँव ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) के प्राचार्य

जब मज़दूर से लेकर अधिकारी तक के बच्चे एक ही स्कूल में पढ़ेंगे, तो सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता समाज के हर तबके की निजी चिंता बन जाएगी। इससे शिक्षकों का मनोबल, जवाबदेही और कार्य-निष्ठा—तीनों स्वाभाविक रूप से सुदृढ़ होंगे।

शिक्षकों से बेहतर परिणाम तभी मिल सकते हैं, जब उन्हें निर्णय लेने और विकल्प चुनने की स्वतंत्रता दी जाए। आज कई शैक्षिक कार्यक्रमों में विषय ऊपर से तय होते हैं और शिक्षकों से केवल क्रियान्वयन की अपेक्षा की जाती है, जिससे उनकी रचनात्मकता सीमित हो जाती है। शिक्षक भी मानते हैं कि उन्हें अनावश्यक काग़ज़ी और गैर-शैक्षिक कार्यों से मुक्त किया जाए तो वे बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।

साथ ही, मेरा मानना है कि पहली से दसवीं कक्षा तक, जब हर वर्ग के बच्चे एक ही सार्वजनिक विद्यालय व्यवस्था में पढ़ेंगे, तो सरकारी स्कूलों के शिक्षकों का मनोबल और ज़िम्मेदारी—दोनों स्वतः मजबूत होंगे।

क्या आप अपने इस विचार को थोड़ा विस्तार से बताएंगे?

यह कोई आदर्शवादी कल्पना नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक सुधार का मार्ग है। जब मज़दूर से लेकर अधिकारी तक के बच्चे एक ही स्कूल में पढ़ेंगे, तो सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता समाज के हर तबके की निजी चिंता बन जाएगी। इससे शिक्षकों का मनोबल, जवाबदेही और कार्य-निष्ठा—तीनों स्वाभाविक रूप से सुदृढ़ होंगे।

जवाबदेही सिर्फ निर्देशों से नहीं, साझा हिस्सेदारी से पैदा होती है। उदाहरण के लिए, नंदुरबार के ज़िलाधिकारी ने अपने बच्चों का प्रवेश ज़िला परिषद स्कूल में कराया, तो उस स्कूल के शिक्षकों पर पढ़ाई की गुणवत्ता बनाए रखने की एक सकारात्मक जिम्मेदारी स्वतः आ गई।

सरकारी शिक्षक यह जानते हैं कि गैर-शैक्षिक सरकारी कार्यों का भारी बोझ उन्हें पढ़ाने के लिए पूरा समय और ऊर्जा नहीं देता। ऐसे में वे अपने ही बच्चों को चाहकर भी सरकारी स्कूल में भेजने से हिचकते हैं।

आपकी दृष्टि में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का परिदृश्य कैसा होना चाहिए?

सबसे पहले शिक्षक चयन की प्रक्रिया में ही ऐसे लोगों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए, जिनमें पढ़ाने की वास्तविक ललक हो।

जवाबदेही और अभिलेख रखना आवश्यक है लेकिन बेहतर व्यवस्था वही होगी, जहाँ आवश्यक दस्तावेज़ीकरण सीमित और लक्ष्यात्मक हो और शिक्षक का मुख्य समय कक्षा-तैयारी और सीखने के नतीजे सुधारने में लगे।

आदर्श परिदृश्य वह है, जहाँ अध्यापन का केंद्र बच्चों का समग्र विकास हो।

विनोबा ऐप आपके कार्य में किस तरह सहायक रहा है?

विनोबा ऐप बड़े स्तर पर शैक्षिक डेटा एकत्रित करने में और शिक्षकों को प्रोत्साहित करने में निश्चित रूप से उपयोगी साबित हुआ है। जैसे-जैसे शिक्षकों को ऐप के उपयोग की बेहतर समझ और प्रशिक्षण मिलेगा, वे इसका अधिक प्रभावी उपयोग कर पाएंगे - चाहे वह डेटा दर्ज करना हो या गतिविधियों का दस्तावेज़ीकरण।

जितना अधिक शिक्षक इसे अपने काम के लिए उपयोगी पाएँगे, उतनी ही सहजता से वे इसे अपनाएँगे और इसका नियमित उपयोग करेंगे। ■

नागपुर महानगरपालिका: नवंबर 2025 माह के लिए आयोजित म. न. पा. एवं यू. आर. सी. स्तरीय कार्यक्रम में कुल 7 शिक्षकों को पोस्ट ऑफ़ द मंथ (POM) से सम्मानित किया गया। इस समारोह में अतिरिक्त आयुक्त वैष्णवी बी. के हाथों शिक्षकों को सम्मान प्रदान किया गया।

सिवनी: यहाँ आयोजित एक ज़िला स्तरीय कार्यक्रम में 'पोस्ट ऑफ द मंथ' (POM) श्रेणी के अंतर्गत 10 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। सम्मान वितरण ज़िला कलेक्टर श्रीमती शीतला पाटले के हाथों किया गया।

अमरावती: ज़िला परिषद CEO श्रीमती संजिता महापात्रा एवं शिक्षाधिकारी (प्राथमिक) श्री सतीश मुगल के हाथों POM श्रेणी के 9 शिक्षक, लाइफस्किल अवार्ड श्रेणी के 6 शिक्षक, लीडरबोर्ड टॉप क्लस्टर के अंतर्गत 3 शिक्षक तथा छात्रवृत्ति श्रेणी में 3 उत्कृष्ट विद्यालयों को सम्मानित किया गया।

धमतरी: ज़िला एवं विकासखंड स्तरीय कार्यक्रमों के अंतर्गत POM श्रेणी में ज़िला स्तर पर 5 शिक्षकों तथा कुरूद, मगरलोड, नगरी और धमतरी विकासखंडों में कुल 8 शिक्षकों को DMC श्री अनुराग त्रिवेदी एवं APC श्रीमती लता साहू के हाथों सम्मानित किया गया।

गरियाबंद: DMC श्री एस.के. शुक्ला, APC श्री मनोज केला एवं APC श्री विल्सन थॉमस के हाथों 5 शिक्षकों को POM से, कक्षा 10वीं, 12वीं, JNV, NMMSE, FLN मिडलाइन एवं FLN++ मिडलाइन श्रेणियों में कुल 18 उत्कृष्ट विद्यालयों तथा टॉप CAC श्रेणी में 3 क्लस्टर प्रमुखों को सम्मानित किया गया।

रायपुर: ज़िला स्तर पर 2 शिक्षक तथा विकासखंड स्तर पर 1 शिक्षक को POM, साथ ही कक्षा 5वीं, 8वीं एवं 11वीं श्रेणियों में 3 उत्कृष्ट विद्यालयों को सम्मान प्रदान किया गया। सम्मान वितरण BEO श्रीमती धनश्वरी साहू एवं BRC श्री आर.के. साहू के हाथों किया गया।

दुर्ग: POM श्रेणी के अंतर्गत विकासखंड स्तर पर 2 शिक्षक तथा ज़िला स्तर पर 2 शिक्षक को सम्मानित किया गया। इसके साथ ही टॉप CAC श्रेणी में 2 क्लस्टर प्रमुखों को भी सम्मान प्रदान किया गया। सम्मान वितरण BEO श्री बी.के. देवांगन के हाथों किया गया।

धमतरी ज़िले में ADEO श्री खेमेश्वर साहू, AD श्री देवेश सूर्यवंशी एवं APC श्रीमती लता साहू के हाथों और **गरियाबंद** ज़िले में DMC श्री एस.के. शुक्ला, APC श्री मनोज केला एवं APC श्री विल्सन थॉमस द्वारा एक-एक शिक्षक को लाइब्रेरी बैग देकर सम्मानित किया गया।

कूट प्रश्न 17 का उत्तर सिर + टक्कर = स्कूल (सिर की टक्कर = सीखना!)

चुन्नी दीदी की कविता वाली खुशहाल कक्षा

जांजगीर-चांपा (छत्तीसगढ़): देवरी गाँव की सरकारी प्राथमिक शाला की प्रधान अध्यापिका सुश्री चुन्नी देवांगन जी, कुछ दिन पहले तक, एक चुनौती से जूझ रही थीं। शाला में कविताएँ तो रोज़ सुबह प्रार्थना सभा के बाद सभी कक्षाओं को पढ़ाई जाती थीं लेकिन चुन्नी जी बच्चों के गिरते रुझान से दुखी थीं। अधिकतर कविताएँ बच्चों के परिवेश से भिन्न थीं और इसी कारण बच्चों का लगाव कविताओं से कम था।

ऐसे में चुन्नी जी को अपना बचपन याद आया, जब कविताओं को रोचक बनाने के लिए उनके शिक्षक उन्हें कलात्मक तरीके से पढ़ाते थे। चुन्नी जी ने यही प्रयोग अपनी शाला में करने का निर्णय लिया।

अगले दिन, सुबह की प्रार्थना के बाद चुन्नीजी ने घोषणा की, "आज कविता नहीं पढ़ेंगे... आज खेल खेलेंगे।" बच्चे आश्चर्यचकित हो गए। चुन्नीजी ने छात्रों के तीन समूह बनाए। एक समूह को उन्होंने कविता को धुन में गा कर, दूसरे को हाव-भाव के साथ और तीसरे को चित्रों द्वारा व्यक्त करना सिखाया। कुछ ही मिनटों में वातावरण बदल गया। हर बच्चा कविता को अभिनीत करने में, गुनगुनाने में, चित्रों और रंगों के द्वारा साकार करने में व्यस्त हो गया। एक बच्ची ने पूछा, "दीदी... क्या मैं धुन सही गा रही हूँ?"

"बहुत अच्छी लग रही है। गाते रहो।"

चुन्नी जी ने टीम विनोबा को बताया कि कविता का अभ्यास वह रोज़ कराती हैं, ताकि बच्चों का कविता से प्रेम बना रहे। कविता पाँचों कक्षाओं में से किसी भी कक्षा की किताब से चुनी जाती है। कभी कभी वह किताबों के बाहर की कविताएँ भी बच्चों को सिखाती हैं, जिससे बच्चों में पाठ्यक्रम के बाहर का साहित्य पढ़ने की भी आदत विकसित हो।

चुन्नी जी बच्चों में उनके प्रयासों की, काव्य से उनके लगाव की धुन ढूंढ रही थीं, वह उन्हें मिल गई है। ■

विकसित भारत का मंत्र, भारत हो नशे से स्वतंत्र

राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़): विद्यालय में उस समय कई गतिविधियाँ चल रही थीं। इसी बीच शासन के निर्देशानुसार हमारे विद्यालय में "विकसित भारत का मंत्र, भारत हो नशे से स्वतंत्र" प्रॉजेक्ट आयोजित किया जाना था और इसकी ज़िम्मेदारी मुझपर सौंपी गई।

मैं जानती थी कि मेरे कुछ छात्र चुपचाप नशे की ओर खींचे चले जारहे थे—और उनमें से एक राजेश (काल्पनिक नाम) भी था, जो कभी मेरी कक्षा का सबसे सजग और सक्रिय हिस्सा हुआ करता था। राजेश कक्षा से बार बार अनुपस्थित रहने लगा था।

मैंने जान बूझकर राजेश को, उसके कुछ मित्रों के साथ, इस कार्यक्रम का कार्यभार सौंपा। लेखन, नारे, साइन बोर्ड, भाषण और चित्रकला—नशे से जुड़े हर पहलू पर काम करने की ज़िम्मेदारी उन्हें दी गई। मेरा उद्देश्य उन्हें कटघरे में खड़ा करना नहीं था, बल्कि उन्हें चिंतन का अवसर देना था।

शुरू में वे बस काम कर रहे थे। लेकिन धीरे-धीरे मैंने बदलाव महसूस किया। जब वे तंबाकू और नशीले पदार्थों के दुष्परिणाम लिख रहे थे, चित्र बना रहे थे, तब वे सिर्फ़ शब्द और रेखाएँ नहीं बना रहे थे; वे घर-घर जाकर अभिभावकों को और बच्चों को नशे से दूर रहने का संदेश भी दे रहे थे।

इस पूरी प्रक्रिया में वे स्वयं से भी संवाद कर रहे थे। राजेश भीतर-ही-भीतर बदल रहा था। यही वह क्षण था, जब मुझे यक़ीन हो गया कि "विकसित भारत का मंत्र, भारत हो नशे से स्वतंत्र" प्रॉजेक्ट ने अपना काम कर दिया है।

- शिक्षिका **सुश्री फरहा अंजुम**,
पी. एम. श्री स्वामी आत्मानंद अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय, डोंगरगढ़ (राजनांदगाँव) ■

कहानी 89% प्रतिशत योग्यता की

बस्तर (छत्तीसगढ़): सोमारी 14 साल की थी, तब उसके पिताजी चल बसे और माँ ने दूसरी शादी कर ली। चुंकि सोमारी का छोटा भाई और दादा-दादी उस पर आश्रित थे, उसका सारा समय मज़दूरी कर के कमाने में और घर के कामों में ही लग जाता था।

इस उम्र में और इस स्थिति में सोमारी को भविष्य के बारे में सोचने का समय भी कहाँ था? आज का दिन निकल जाए, बस। इन सब में उसका स्कूल आना बंद हो गया।

गाँव के शासकीय हाई स्कूल की शिक्षिका श्रीमती सईदा ख़ान वर्षों से शिक्षा का स्तर सुधारने पर काम कर रही थीं। वे इस बात को अनदेखा कैसे करतीं? वे सोमारी से बात करने उसके घर पहुँचीं। उन्होंने सोमारी को समझाया कि पढ़ाई से ही हालात सुधर पाएँगे। वह कम से कम सप्ताह में दो या तीन बार ही सही, स्कूल आ जाए। वे उसके लिए थोड़ा अतिरिक्त समय निकालकर उसकी पढ़ाई पूरी करवाएँगी।

सोमारी भी बात को समझ गई। वह सप्ताह में 3 दिन स्कूल आने लगी और सईदा जी के मार्गदर्शन में पढ़ाई करने लगी। सईदा जी ने उसके लिए आसान नोट्स बनाए, जो वह कम समय में भी बार बार पढ़कर याद कर सके। सप्ताह के बाकी 3 दिन सईदा जी सोमारी के घर जाती थीं। इस तरह उन्होंने सोमारी की परीक्षा के लिए तैयारी पूरी करवाई।

दोनों की मेहनत रंग लाई। कक्षा 10 में सोमारी ने 89% प्राप्त कर सबको चकित कर दिया। आज भी यह किस्सा सुनाते हुए सईदा जी की आँखें नम हो जाती हैं।

सोमारी अब 12 वीं कक्षा में है। अभी भी ज़िम्मेदरियाँ, कठिनाइयाँ कम नहीं हुई हैं—न सोमारी की, न सईदा जी की।

बस एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है। एक और छात्रा ने अपने गुरु का हाथ थामकर उजाले का रास्ता चुन लिया है। ■

कविता

खरंच विनोबा तू खास आहे

तुझ्या मुळे जुळली
आमची नाळ आहे.
कोपऱ्या कोपऱ्यातल्या
शिक्षकाची ओवली तू माळ आहे
खरंच विनोबा तू खास आहे.

तू जाणलं त्याचं कर्तृत्व आहे,
अन् तुझ्या मुळे पुढे येऊ लागलं
त्याचं व्यक्तिमत्व आहे.
खरंच विनोबा तू खास आहे.

आमच्यातलं असंख्य कलाज्ञान
तुझ्या मुळे आलं पुढे आहे.
तुझ्यात आमच्यात हितगुज ही
आता वाढलं आहे.
खरंच विनोबा तू खास आहे.

कडी कडी जुळून
साखळी तयार केली.
धन्यवाद विनोबा तुला,
कारण तूच बनला
आमचा दर्पण आहे.
खरंच विनोबा तू आमच्यासाठी
खास आहे.

शिल्पा भाऊराव काळे
शिक्षिका, जि.प.शाळा लाडखेड
ता.दारव्हा जि. यवतमाळ
(महाराष्ट्र)

ग्रामीण छात्रों को सिखाने आई 'इंग्लिश पल्लवी'

(यह चित्र कहानी के वास्तविक पात्रों का नहीं है; प्रतीकात्मक है।)

बुलढाणा (महाराष्ट्र): देऊलगाँव माहि की ज़िला परिषद सेंट्रल सेमी-इंग्लिश प्राथमिक शाला में पढ़ने वाले कक्षा 2 के बच्चे अंग्रेज़ी से जूझ रहे थे। उन्हें न तो अल्फाबेट्स याद रहते थे, न ही स्पेलिंग्स समझ आती थीं। किताबें बोझ लगती थीं, और अंग्रेज़ी से डर लगता था।

तभी इस क्लास में आईं श्रीमती सविता जगन्नाथ टापरे, जिन्होंने ठाना कि बच्चों के मन से इस डर को अब हमेशा के लिए भगाना है।

उन्होंने एक रोचक गतिविधि शुरू की —"इंग्लिश पल्लवी" । नाम जितना मधुर, तरीका भी उतना ही प्रभावशाली। बच्चों को A से Z तक के अक्षर सिखाने के लिए उन्होंने हर अक्षर को एक परिचित शब्द से जोड़ा — A for Apple, B for Ball... और फिर इसे एक गीत का रूप दिया। हर दिन स्कूल छूटने से पहले बच्चे इस गीत को गाते, तालियों की लय में, मुस्कुराते हुए।

जब अक्षर पक्के हो गए, तो सविता जी ने स्पेलिंग याद करने का नया तरिका सिखाया। कक्षा का एक बच्चा सामने आता और किसी शब्द की स्पेलिंग क्रिया के द्वारा दिखाता। बाकी बच्चे उसे पहचानने का प्रयत्न करते। खेल जैसे इस अभ्यास से बच्चे अंग्रेज़ी में रुचि लेने लगे।

धीरे-धीरे बच्चों की एकाग्रता बढ़ने लगी, पाठ याद होने लगे और अंग्रेज़ी सीखना अब एक चुनौती नहीं रही।

एक जोड़ी कपड़े और दो समर्पित शिक्षक

अहिल्यानगर (महाराष्ट्र): लोनी बंगला गाँव के ज़िला परिषद स्कूल में कुछ समय पहले तक हालात ऐसे थे कि बच्चे नियमित स्कूल नहीं आते थे। घंटी तो बजती थी, पर बच्चों की आवाज़ें सुनाई नहीं देती थी। कई बार तो हेडमास्टर प्रकाशचंद्र जी कदम को गाँव जाकर अपनी गाड़ी में बच्चों को लाना पड़ता था।

स्कूल की एक बच्ची एक दिन स्कूल नहीं आई। आमतौर पर वह रोज़ स्कूल आती थी, इसलिए शिक्षकों को चिंता हुई। वह लड़की बीमार तो नहीं है? प्रकाशचंद्र जी और शिक्षिका कविता तलोले ने उसके घर जाकर पूछताछ की। जो जवाब मिला, उसने शिक्षकों को पल भर के लिए निरुत्तर कर दिया। बच्ची ने कहा कि उसके कपड़े गंदे थे और दादी, जो आमतौर पर धो देती थीं, गन्ना कटाई के लिए बाहर गई थीं। बिना साफ कपड़ों के वह स्कूल आने में झिझक रही थी।

इस पर प्रकाशचंद्र जी और कविता जी ने वह किया जो शायद कोई सोच भी न पाए — उन्होंने खुद बच्ची के कपड़े धो दिए। वे बच्ची को यह समझाना चाहते थे कि स्कूल जाना कितना ज़रूरी है; और वह स्कूल में न हो तो सब उसे याद करते हैं।

कविता जी और प्रकाशचंद्र जी ने छोटी छोटी क्रियाओं द्वारा सरलता, समर्पण और करुणा जैसे जीवन के ज़रूरी सबक बच्चों को सिखा दिए। पढ़ाई को खेल, संवाद और रोचक गतिविधियों से जोड़कर उन्होंने छात्रों को पाठ्यपुस्तकों के अलावा भी भरपूर ज्ञान दिया। कुछ समय पहले बच्चे जहाँ आने से कतराते थे, वही स्कूल धीरे धीरे बच्चों के पसंद की जगह बन गई।

(यह चित्र कहानी के वास्तविक पात्रों का नहीं है; प्रतीकात्मक है।)

विनोबा के मंच पर 18 वर्ष बाद मिली 3 सहेलियाँ

नासिक (महाराष्ट्र): अठारह साल। इतना लंबा समय कि जीवन अपनी-अपनी दिशा पकड़ ले। डी.एड. के दिनों की तीन सहेलियाँ—सुजाता पाबले, गौरी गायवन और ज्योति कुलधर—समय के साथ नासिक ज़िले के अलग-अलग हिस्सों में पहुँच गईं थीं। सुजाता जीनिफाड़ तहसील के ओझर टाउन-शिप में, गौरी जी सुरगाणा के गालपाड़ा में और ज्योति जी येवला के कुलधर वस्ती में पढ़ा रही थी। स्कूल बदले, रास्ते बदले, पर शिक्षक होना, यह पहचान नहीं बदली।

वर्षों बाद, बिना किसी पूर्व योजना के, तीनों एक ही डिजिटल मंच से जुड़ीं। विनोबा ऐप पर वे नियमित रूप से अपनी कक्षाओं के अनुभव और नवाचारी प्रयास साझा करने लगीं। पढ़ाने की वही लगन, वही ईमानदारी—बस माध्यम नया था।

संयोग ऐसा बना कि तीनों का चयन ज़िला स्तर के 'पोस्ट ऑफ द मंथ' (POM) सम्मान के लिए हुआ। ज़िला परिषद कार्यालय में वे आमने-सामने आईं। पूरे 18 वर्षों के बाद। सहेलियों ने पूरा दिन पुरानी यादों, बातचीत और ठहाकों में बिताया।

विनोबा ऐप ने उन्हें यह एहसास कराया कि सीखने की यात्रा अकेली नहीं होती। ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) इसी सोच के साथ देशभर के शिक्षकों को एक-दूसरे से जोड़ने का सपना देखता है ताकि दूर-दराज़ में काम कर रहे शिक्षक भी एक साझा समुदाय का हिस्सा बन सकें।

उस दिन तीन शिक्षिकाएँ सिर्फ सम्मान लेकर नहीं लौटीं, वे अपने साथ एक पुरानी दोस्ती भी फिर से जीवित कर लाई थीं।

शिक्षा संदेश

मिश्री

- संदेश संजय थोरवे, ओपन लिंक्स फाउंडेशन, पुणे

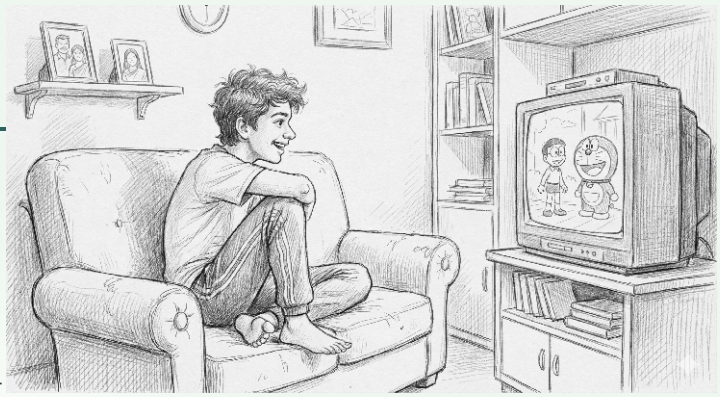

नौवीं कक्षा में पढ़ने वाला आरव अपने घर पर आराम से बैठा था। रविवार का दिन था और टीवी पर उसका पसंदीदा 'डोरेमोन' कार्टून चल रहा था।

तभी रसोई से माँ ने आवाज दी, "आरव! मेहमान आने वाले हैं। जल्दी से दुकान जाकर सामान ले आओ!"

माँ ने आरव के हाथ में एक छोटी सी लिस्ट (पर्ची) और पांच सौ रुपये का नोट दिया। लिस्ट में चीनी (1 किलो), मूंगफली (आधा किलो) और घी (छोटा डिब्बा) लिखा था।

आरव जल्दी से अपनी साइकिल लेकर दुकान पहुंचा और सामान माँगा। दुकानदार मामा ने कहा, "बेटा, आज सुबह ही चीनी खत्म हो गई। तुम मिश्री ले जाओ।"

आरव सोच में पड़ गया। उसे तो चीनी चाहिए थी। तभी उसे याद आया कि कुछ दिन पहले क्लास में टीचर ने कहा था कि सिंगापुर में बच्चों को समस्या सुलझाने के लिए बढ़ावा दिया जाता है। "अगर हमारे पास इच्छित साधन नहीं है तो रुकना नहीं चाहिए। जो साधन उपलब्ध हैं, उनका उपयोग करके रास्ता निकालना चाहिए!"

आरव को अच्छा मौका मिला था समस्या सुलझाने का। "मिश्री थोड़ी मोटी होती है तो क्या हुआ, मीठी तो है ही। घर जाकर इसे बारीक करने का कोई उपाय सोचूँगा!" उसने दुकानदार मामा से कहा, "ठीक है, आप मिश्री ही दे दीजिये।"

घर आने पर माँ ने सामान देखा और गुस्से से बोली, "अरे, मैंने चीनी मंगवाई थी, तुम यह मिश्री क्यों लाए?"

आरव ने कहा, "माँ, दुकान में चीनी नहीं थी। मैं इसे अभी मिक्सर में बारीक कर देता हूँ!"

माँ बोली, "थोड़ी देर पहले ही बिजली चली गई है। अब क्या करोगे?"

माँ की बात सुनकर आरव थोड़ा घबराया। वह हॉल में गया और सोचने लगा कि 'अब क्या करूँ?' तभी उसकी नज़र वहां रखे कुछ चिकने पत्थरों पर पड़ी। उसने माँ को आवाज दी, "माँ, रुको! मेरे पास एक उपाय है।"

उसने ज़मीन पर एक साफ़ सूती रूमाल बिछाया। उस रूमाल में उसने वह सारे पत्थर एक साथ रखे और रूमाल की गांठ बांधकर पत्थरों की एक पोटली बना ली।

माँ उसे हैरानी से देख रही थी और बोली, "यह क्या कर रहे हो? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा!"

आरव हँसकर बोला, "माँ, तुम बस देखती जाओ!"

आरव ने एक दूसरा रूमाल लिया। उसमें दो मुट्ठी मिश्री बांधकर उसे पत्थरों की पोटली पर मारना शुरू किया।

'धपक! धपक!' चार-पांच बार मारने पर मिश्री के बहुत छोटे छोटे टुकड़े हो गए। माँ खुश होकर बोली, "अरे वाह! यह तो मिक्सर से भी जल्दी हो गया और आवाज भी नहीं हुई!"

आरव ने फिर बाकी मिश्री भी इसी तरह पीस दी।

माँ ने हैरान होकर पूछा, "लेकिन तुम्हें यह उपाय कैसे सूझा?"

आरव ने कहा, "स्कूल में एक बार टीचर ने कहा था कि अगर साधन नहीं है तो काम को रोकना नहीं चाहिए, उसका कोई न कोई रास्ता निकालना चाहिए।"

आरव जा कर फिर से टीवी के सामने बैठ गया। टीवी पर डोरेमोन अभी भी चल रहा था। नोबिता किसी छोटे से काम के लिए रो रहा था और डोरेमोन से गैजेट मांग रहा था। यह देखकर आरव की नज़र कोने में रखे उन पत्थरों पर गई।

नोबिता को रोता देख आरव हँसा और खुद से बोला, "अरे नोबिता... कभी अपना दिमाग भी चला लिया कर!"

बधाई, डॉ. प्रज्ञा सिंह

छत्तीसगढ़ के दुर्ग ज़िले की शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, हनोदा में कार्यरत शिक्षिका डॉ. प्रज्ञा सिंह को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान प्राप्त हुआ है। भूविज्ञान में डॉक्टरेट के साथ-साथ गणित, अंग्रेजी और संस्कृत में स्नातकोत्तर डिग्रियाँ रखने वाली डॉ. प्रज्ञा सिंह ने अपने गहन विषयगत ज्ञान और नवाचारपूर्ण शिक्षण पद्धतियों से ग्रामीण शिक्षा को नई दिशा दी है।

शिक्षण के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए इससे पूर्व उन्हें राज्य शिक्षक सम्मान (2022), मुख्यमंत्री गौरव अलंकरण (2019) और ग्राम गौरव सम्मान सहित ज़िला व राज्य स्तर पर अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। विद्यालय में गणित लैब, गणित पार्क और उल्लास केंद्र की स्थापना के साथ-साथ सामुदायिक सहभागिता से शाला के जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण में उनकी सक्रिय भूमिका रही है। उनके मार्गदर्शन में प्रतियोगी परीक्षाओं की विशेष तैयारी के परिणामस्वरूप अब तक NMMSE में 23 विद्यार्थियों तथा प्रयास और 'श्रेष्ठा' में 3 विद्यार्थियों का चयन हो चुका है।

उन्होंने नशामुक्ति और बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने के लिए समुदाय को जागरूक किया। इसके अलावा, कॉर्पोरेट सहयोग से सैनिटरी नैपकिन वितरण की पहल कर उन्होंने किशोरियों के स्वास्थ्य और आत्मसम्मान को भी सशक्त किया।

टीम विनोबा की ओर से डॉ. प्रज्ञा सिंह को उज्ज्वल भविष्य और निरंतर उपलब्धियों के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

शिक्षा में AI का नया दौर: मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने की समीक्षा

नई दिल्ली: केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने शिक्षा में AI के उपयोग पर एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि AI (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) तकनीक शिक्षकों को विस्थापित नहीं, बल्कि सशक्त करेगी। बैठक में 'दीक्षा 2.0' और 'गुरु-मित्र' जैसे ऐप पर चर्चा हुई जो AI के ज़रिए शिक्षकों को पाठ योजना (Lesson Plans) बनाने में मदद करेंगे। दीक्षा 2.0 और 'गुरु-मित्र' जैसे ऐप के माध्यम से व्यक्तिगत शिक्षण (Personalized Learning) पर ज़ोर दिया जा रहा है। मंत्री जी ने स्पष्ट किया कि तकनीक का उद्देश्य शिक्षकों की कमी को पूरा करना नहीं, बल्कि उनकी कार्यक्षमता को बढ़ाना है। उल्लेखनीय है कि NEP 2020 (नैशनल एजुकेशन पॉलिसी) के तहत माध्यमिक स्तर पर AI को स्किल सब्जेक्ट के रूप में शामिल किया गया है।

NCERT की नई पुस्तकें: रटने के बजाय अब 'सीखने' पर जोर

NCERT ने सत्र 2025-26 के लिए कक्षा 4, 5, 7 और 8 की नई पाठ्यपुस्तकों का शेड्यूल जारी किया। नई किताबें 'योग्यता-आधारित' होंगी और डिजिटल सामग्री के लिए इनमें QR कोड्स होंगे। नई किताबों के नाम भी बदल दिए गए हैं, जैसे कक्षा 5 की हिंदी किताब का नाम 'वीणा' और अंग्रेजी का 'संतूर' रखा गया है। इन किताबों में 'भारतीय ज्ञान परंपरा' (IKS) को प्रमुखता दी गई है।

पी एम श्री स्कूलों की समीक्षा

दिसंबर में मंत्रालय ने देश भर के पीएम श्री स्कूलों की प्रगति जांची। स्मार्ट क्लासरूम के ज़रिए सरकारी स्कूलों को 'एस्पिरेशनल' बनाने का लक्ष्य सफल हो रहा है। हालिया समीक्षा में झारखंड (बोकारो) जैसे ज़िलों में ज़िलाधिकारियों ने स्कूलों को 'ग्रीन स्कूल' बनाने और छात्राओं के लिए आत्मरक्षा प्रशिक्षण (सेल्फ डिफेंस) अनिवार्य करने के निर्देश दिए हैं।

डिजिटल लाइब्रेरी:

महाराष्ट्र के 500 और स्कूलों में इस महीने स्मार्ट लाइब्रेरी प्रोजेक्ट को मंजूरी मिली है।

OLF टिप : "क्या आप जानते हैं? tickLinks पर अब 9,500 से अधिक पाठ योजनाएं (Lesson Plans) मुफ्त उपलब्ध हैं।"

शीतकालीन अवकाश और नई गाइड लाइन्स

उत्तर भारत में बढ़ती ठंड को देखते हुए दिल्ली और यूपी में नई गाइडलाइन्स जारी। पंजाब में 10 जनवरी तक छुट्टियां घोषित हैं, जबकि कई क्षेत्रों में हाइब्रिड लर्निंग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

निपुण भारत अपडेट:

छत्तीसगढ़ के सरकारी स्कूलों में 'बाल वाटिका' के माध्यम से भाषा ज्ञान पर विशेष कैंप लगाए जा रहे हैं।

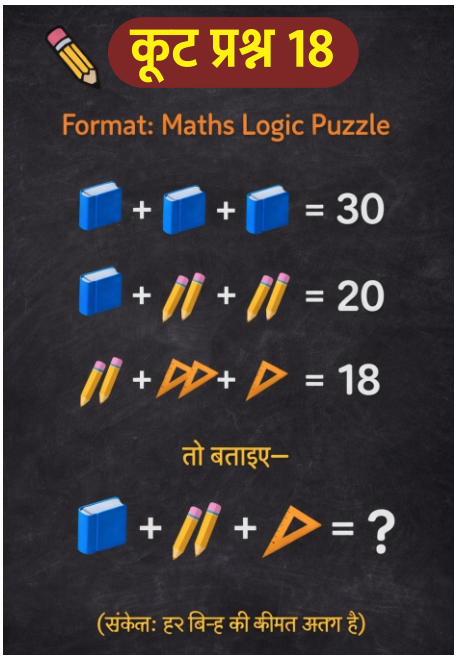

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन ऑफिस नं. 403, पिकासो केदारी लैंडमार्क, केदारी नगर, वानवडी, पुणे – 411 040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापिका: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**